भूल

करीब आधे घटें से नीरव यहां खडा,था वह बार बार घडी देखता और वन्दना पर क्रोध से मुटिठयां भीचं रहा था । सिर्फ आधे घटें का समय उसने बडी कठिनता से काटा था लगता था जैसे वह युगों से यहीं इस विशाल बरगद ने नीचे खडा वन्दना की प्रतीक्षा कर रहा है । वन्दना थी भी बहुत बातूनी किसी सहेली से बातें करते हुए वह यह भूल चुकी होगी कि नीरव बडी बेचैनी से उसकी प्रतीक्षा कर रहा होगा । कालेज का यह कोना अकसर सूना रहता था और इसी कारण उनदोनों का मिलन स्थल बना रहा है उस समय से ही जब लाइब्रेरी में नीरव से वन्दना मिली थी । ढेर सारी किताबें इशू कराने के बाद लदी फदी जब वह दरवाजे से निकल ही रही थी कि नीरव से टकरा गई । वह आश्चर्य और गुस्से से नीरव की और देख रही थी और नीरव उसकी और देखता हुआ मुस्कुरा रहा था । टकराने से किताबे बिखर गई थी और वह उन्हें बटोरने में लगा था । वन्दना ने कहा-देखकर नहीं चल सकते? नीरव हंस पडा,बोला-मै तो देखकर ही चल रहा था पर आप तो किताबों से चेहरे तक ढकी थीं आपको कहां पता चल रहा था कि सामने सीढी है ? वन्दना ने सोचा ठीक ही तो कह रहा है मैं ही तो ढेरों किताबें लिए चल रही थी फिर भी उसका गुस्सा नहीं उतरा । जब नीरव ने किताबें उसे दे दीं तो वन्दना ने कहा -थैक्यू

पर उसके स्वर में अभी तक नाराज़गी थी । उसके कोमल चेहरे पर बाल बिखर आए थे नीरव को मन ही मन बहुत हंसी आ रही थी लेकिन उसने उसे प्रकट नहीं होने दिया । बिल्कुल फिल्मों वाली बात । उसी समय वन्दना की सहेली उमा आ गई उसने कहा -इतनी किताबें एक बार ही इशू कराने की क्या ज़रूरत थी ? उसने कुछ किताबें ले ली और दोनों घर की ओर चल पडी । ,उस दिन के बाद दूसरे दिन जब वन्दना उसे मिली वन्दना ने धीरे से मुस्कुरा कर कहा -सौरी । नीरव ने हंसते हुए कहा-सारी किताबें पढ लीं? हंसी तो वन्दना को भी आ रही थी लेकिन उसने कहा-रोज लाइब्रेरी जाने में बहुत समय बर्बाद होता है और क्लास भी छूटता है इसीसे एक ही दिन इशू करा लिया अब दो महीने बाद ही पुस्तकें लौटाऊगी । उसकी मुस्कुराहट से उत्साहित होकर नीरव ने मेस में च्लकर चाय पीने की इच्छा प्रकट की । वन्दना इनकार न कर सकी और दोनो मेस की ओर चल पडे,। उस दिन से करीब रोज ही दोनों इस वृक्ष के नीचे मिलते और ढेरों बातें करते रहते । दोनो ही एक दूसरे को चाहने लगे थे । दोनो सोचते अगर नीरव को नौकरी मिल जाय तो वे शादी कर लें और फिर दोनो को एक दूसरे से बिछडना न पडे,। वन्दना के मां बाप कटटर जातिवादी थे वे वन्दना को किसी गैर बिरादरी में शादी की आज्ञा नहीं देगें यह वन्दना जानती थी फिर भी उसे लगता था कि अगर नीरव उसके माता पिता से मिलेगा तो वे उससे जरूर प्रभावित होंगे । अगर वे नीरव को स्वीकार कर लें तेा दोनों को ही खुशी होगी इसीसे वन्दना ने एक दिन खाने के टेबल पर अपने पिता से कहा-पापा मेरे साथ एक लडका पढता है वह आपसे मिलना चाहता है । क्यों मिलना चाहता है? पिता के स्वर की कठोरता से वन्दना सहम गई । उन्होने कभी इस तरह कभी बात ही नहीं की थी । क्या तुमने कोई गलती की है? साहस करके जो कहा वह था सिर्फ नहीं । वे जोरों से हस पडे । हंसते हुए बोले -चुहिया और उसके सिर पर एक धौल जमा कर हंसते हुए गाडी में बैठ गए । लेकिन वन्दना डर गई थी आजतक उसने पापा का सिर्फ प्यार ही पाया था । इतने कठोर स्वर में तो वह कभी बोले ही नहीं थे । पापा की लाडली,बेटी थी वह तो । उसने नीरव को फोन किया और बोली -कुछ दिन तुम पापा से नहीं ही मिलो तो ठीक है । कुछ दिन बीत जाने के बाद एक दिन तुम घर पर आ जाना । मैं पापा का मूड देखकर तुम्हें फोन कर दूंगी । नीरव ने हंसकर कहा-ठीक ही नाम रखा है तुम्हारे पिता ने ;चुहिया;ठीक चुहिया की तरह हर बात में डर जाती हो । खैर जैसी आपकी आज्ञा? लेकिन आज रह रह कर उसे वन्दना पर बहुत क्रोध आ रहा था । इस वृक्ष के नीचे लताओं और झाडियों के बीच एक छोटी सी लोहे की बेंच थी जिस पर वन्दना और नीरव अकसर बैठा करते थे । उनके लिए तो यह तो एक सिहासन था जिस पर राज़ा नीरव और रानी वन्दना बैठा करते । वृक्षों की छाया और घनी झाडियों के कारण वहां दिन में भी अधेरा रहता था और वे दोनों वहां घंटों बैठे बातें करते रहते ।

दुनियां जहान की बाते प्रोफेसर लोगों के विषय में फिल्मों के विषय में या फिर सहेलियों और मित्रों के विषय में । दोनों की जातियां भिन्न थी बस यहीं यह समाज उनदोनो के मार्ग में रोडे, अटकाने की सोच सकता था नहीं तो नीरव तो बहुत अच्छा लडका था । पढने में तेज सभ्य शिष्ट । दूसरों का सम्मान करनेवाला प्यारा भोला भाला जिसे शिक्षक से लेकर छात्र तक बहुत प्यार करते थे । वन्दना थी बहुत चंचल और शरारती । दिनभर सहेलियो को चिढाना चुटकुले सुनाना और फिल्मों की कहानियां सहेलियों को सुनाना ही उसका काम था । कब दो विपरीत स्वभाव के वन्दना और नीरव में प्यार हो गया पता ही नहीं चला । अब तो दोनो को ही ऐसा लगने लगा था कि वे दोनों एक दूसरे के बिना जी ही नहीं पाएगे । एक दिन शाम के करीब सात बजे

नीरव का फोन घनघनाया । उसने सोचा किसी दोस्त का होगा और उसने अनमने भाव से कहा-कौन है? उधर से वन्दना बोल रही थी -नीरव तुम अभी मेरे घर आ जाओ पापा का मूड ठीक है । शायद अभी बात करना ठीक होगा । नीरव ने फोन रखा और तैयार होने चल पडा,सब ने पूछा किसका फोन था पर उसने किसी को नहीं बताया । सिर्फ इतना कहा जरूरी काम है और मोटर साइकिल उठाकर चल पडा । औपचारिक बातों के बाद उसने डरते डरते कहा- अंकल मै एक विशेष काम से आपके पास आया था । वन्दना के पिता ने कहा कहो क्या बात है ? उसने कहा मैं और वन्दना एक दूसरे को पसन्द करते हैं और मैं इससे शादी करना चाहता हूं अगर आप इजाजत दें तो । वन्दना के पिता की भौहों मे बल पड गए चेहरा लाल हो गया । उन्होने कहा हमारे खानदान में शादी की बात मां बाप करते हैं बच्चे नहीं । तुमलोग पढने जाते हो या प्यार करने? पढाई को सिनेमा बनाने की कोशिश मत करो । आइन्दा उससे मिलने की कोशिश भी मत करना नहीं तो परिणाम अच्छा नहीं होगा । मैं तो उसकी पढाई बन्द करवा ही दूंगा और तुम्हें भी नहीं छोडूगा,। नीरव ने हिम्मत करके कहा-इसमें क्या बुराई है ?मुझमें कोई कमी है ? मैं उससे प्यार करता हूं और मुझे इसमें कोई बुराई नजर नहीं आती । वन्दना के पिता चन्द्रदेव सिंह कुर्सी से उछल पडे, और चीख कर बोले-यही सीखा है तुमने?बडों से ऐसे बात करते हैं? मैं वन्दना को काट दूंगा पर तुम्हारी जात में शादी नहीं करूगां । नीरव खून के घूंट पीकर रह गया । अगर बात और बिगडने का डर नहीं होता तो वह उन्हें खरी खोटी सुना चुका होता लेकिन उसने सोचा उसके बोलने से कहीं बात और बिगड, ना जाय । वह चुपचाप होस्टल चला आया । रातभर दुख और निराशा से उसे नींद नहीं आई रोता ही रहा । सुबह जब वन्दना के पिता दफ्तर चले गए तो वन्दना ने नीरव को फोन किया । नीरव मैं बहुत दुखी हूं तुम मुझे सपना के यहां मिलो । बडे, उदास मन से वह सपना के यहां गया । वह दूसरे के यहां वन्दना से मिलने नहीं जाना चाहता था क्योकिं इससे जयादा से ज्यादा लोगों को उनके प्यार की बात पता चलती और वन्दना की बदनामी होती । लेकिन वन्दना से मिले बिना तो जैसे उसकी सांस ही रूकने लगती थी । सपना के यहां जब वे दोनों मिले दोनों ही बडे, उदास थे । एक ही दिन में जैसे दोनों बुझ गए थे लगता था जैसे वे फिर नहीं मिल पाएगे । अजीब सी उदासी और व्याकुलता में डुबे थे दोनों । नीरव ने कहा-अब तो कोई उपाय हीनहीं है वन्दना । अब तो जबतक मैं अपने पैरों पर खडा, नहीं हो जाता कुछ कहा नहीं जा सकता । बस परीक्षा तक इन्तजार करो ।

वन्दना की आंखों से सावन भादो की झडी, लगी थी । कैसे तुमसे मिले बिना रह सकूगीं समझ में नहीं आता ? उदास तो नीरव भी था उसने कहा-अब तो समय की प्रतीक्षा करनी ही होगी । एक महीने तक वन्दना कालेज नहीं जा सकी उसके बाद स्वयं उसके पिता ने कहा-कालेज जा सकती हो क्योकि इसी साल तुम्हारी परीक्षा है पर उस लड,के से कभी नहीं मिलना । अगर मुझे पता चला कि तुम उससे मिलती हो तो पढाई हमेशा के लिए छुडवा, दूगा । और फिर वन्दना कालेज जाने लगी थी । नीरव और वन्दना मिलते तो थे लेकिन सदा सर्तक रहते कि कोई देख ना ले । परीक्षा में नीरव ने बहुत अच्छा किया पर वन्दना ज्यों त्यो पास भर हो सकी । उसका मन कहां लगता था पढाई में ? परीक्षा के बाद जब भी वन्दना और नीरव मिलते सपना ही सहायक बनती थी । परीक्षा के बाद नीरव ने कई जगह आवेदन दिया था नौकरी के लिए और एक दिन सुबह सुबह सपना ने फोन किया वन्दना ने जब फोन उठाया सपना ने हंसते हुए कहा- मुह मीठा करा तो एक खुशखबरी दूं । वन्दना बोली-मेरी किस्मत में खुशी कहां ? सपना बोली-ज्यादा बनो मत मिठाई लेकर आ जा । वन्दना की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या बात हो सकती है । वन्दना ने रास्ते में मिठाई खरीदी और सपना के घर पहुची । वहां नीरव को देख वन्दना खिल उठी । कई दिनों से उसे देखा भी नहीं था । नीरव बडा, खुश नजर आ रहा था । वह बोला -मुझे अमेरिका में पढने के लिए स्कालरशिप का आफर आया है । वहां अच्छी युनिवर्सिटी में पी एच डी करने का और बाकी समय में पार्ट टाइम काम करके बाकी खर्च चलाने का । वन्दना बहुत खुश हुई बोली-तो अब तुम अमेरिका जा रहे हो ? लेकिन मैं तुम्हारे बिना कैसे रहूंगी सोचा है?कुछ ही दिन बीतते है कि तुमसे मिलने को मैं बेचैन हो जाती हूं । तुम चले जाओगे तो मैं क्या करूगी? उसकी आखे, भर आईं । नीरव ने अपने आसूं रोके और बोला-रोकर मुझे कमजोर मत करो वन्दना; अगर तुम रोओगी तो मेरी हिम्मत टूट जाएगी । हमलोगों के पास मिलने का यही एक रास्ता बचा है । मै वहां जाकर तुम्हे बुला लूगां फिर कोई मुश्किल नहीं होगी । फिर एक दिन नीरव चला गया । बहुत रोई वन्दना उस दिन । जाने के समय वन्दना ने कहा नीरव मुझे धोखा मत देना । मैं तुम्हारे भरोसे हूं । वन्दना की बाहें पकड,कर नीरव ने कहा-ऐसी बात फिर न कहना तुम तो मेरी जिन्दगी हो मैं ऐसा तो इस जीवन में सोच भी नहीं सकता अगले जनम का मुझे पता नहीं । हर सप्ताह सपना के पास नीरव का फोन आता । एक बार उसने मजाक में ही वन्दना को कह दिया तुम किसी अमेरिकन से शादी कर लो और अमेरिका आ जाओ । वन्दना ने क्रोध से कहा-देखो इस तरह का मजाक मुझे पसन्द नहीं फिर ऐसी बात मत कहना लेकिन नीरव हंसता रहा । वन्दना ने कहा-इस तरह की बात सोचना भी मेरे लिए पाप है । लेकिन इस मजाक ने अनायास ही एक

संभाबना का द्वार खोल दिया । पुरे सप्ताह वह इस बात पर सोचता रहा ओर जब अगली बार वन्दना से उसकी बात हुई नीरव ने कहा-देखो बुरा मत मानना मैं सोच रहा था अगर अमेरिका में काम करनेवाले किसी लडके, से तुम्हारा विवाह हो जाता है तो तुम आसानी से यहां आ जाओगी । यहां आने पर मैं तूम्हे चुपके से अपने पास ले आउगां । अगर कोई परेशानी हो या तुम्हारा पति पुलिस को खबर करे तो तुम कह देना कि यह मुझे बलपूर्वक ले आया है । मैं इसके साथ नहीं रहना चाहती । बस हमारी समस्या का समाधान हो जाएगा ।

नीरव को गए छह महीने हो गए थे । वन्दना के पिता उसके लिए लडका ढूढ रहे थे । वन्दना अपने छोटे भाई से और मां से कहती-मेरी सहेली का पति अमेरिका में है बहुत तारीफ कर रही थी अमेरिका की । कहती थी कि क्या देश है?कितना साफ सुथरा और व्यवस्थित पैसा तो वहां बरसता है । शादी करे तो अमेरिका में भारत में तो आदमी सडता है । उसके छोटे भाई राजु से उसकी खूब बनती थी । जब भी अखवार में वैवाहिक विज्ञापन वह देखता वह गौर से देखता अगर उसमें अमेरिका में रहनेवाले किसी लडके का पता होता तो वह पिताजी से कहता वन्दना को अमेरिका जाने का बहुत मन है क्यों न इस से बात करें पिताजी?धीरे धीरे उसके पापा के विचार भी बदलने लगे थे । उन्हें भी लगने लगा कि वन्दना को शायद अमेरिका जाने का बहुत मन है वे वन्दना को प्यार भी तो बहुत करते थे । वे भी इस प्रकार के लडके से वन्दना की शादी करने की बात सोचने लगे थे । ऐसे ही एक लडके का पता अखवार में देखकर उन्होनें फोन किया । लडके का नाम शिशिर था और वह भी वन्दना की जाति का ही था । संयोग से लडका विवाह के लिए भारत आया हुआ था । वन्दना के पिता चन्द्रदेव सिह वन्दना की फोटो लेकर शिशिर के पिता से मिले तो बडी सरलता से वे विवाह के लिए राजी हो गए । चन्द्रदेव सिह का परिवार तो बहुत अच्छा है वे यह जानते थे । जिस दिन शिशिर उसे देखने आया वन्दना खूब रोई । उसे लगा था नीरव को पाने के लिए उसे कितने बडे, छल का सहारा लेना पड, रहा है । कितनी गिरी हुई बात । क्या पति होने का हक वह नहीं जताएगा?जिस पवित्रता से वह नीरव को चाहती है उसे कैसे बचाएगी । इस विषय में जब नीरव से उसकी बात हुई उसने साफ कह दिया इसमें कोई बुराई नहीं है । हमारे पास मिलने का यही एक तरीका है । फिर वन्दना का विवाह हो गया । शिशिर को वन्दना बहुत पसन्द आई । वह बहुत वर्षो से अमेरिका के एक बडे, फर्म में काम करता रहा था । उसे अमेरिका में बसी भारतीय लडकियों की स्वच्छन्दता बिल्कुल पसन्द नहीं थी । उसे सीधी सादी सरल स्वभाव की लडकी, चाहिए थी जो वन्दना में उसे नजर आ रही थी । जब यह बात सपना को जान पडी,वह दौडी,दौडी,आई और वन्दना की बांह खीचकर एकांत में ले गई और पूछा-यह तू क्या कर रही है ? नीरव को धोखा देने का खयाल तुझे आया कैसे?वह अमेरिका में बैठा तुम्हारी आस लगाए है और तू दूसरे से शादी कर रही है?मैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दूंगी । वन्दना मन ही मन रो रही थी लेकिन उसने कहा -तुम क्या समझती हो मुझे दुख नहीं है?पर हमारे मिलने का यही एक तरीका बचा है फिर वन्दना और शिशिर का विवाह हो गया । कहने को तो वह उसकी विवाहिता पत्नी थी पर हर पल उसके हृदय में नीरव बसा रहता था । जब भी शिशिर उसे छूता लगता जैसे उसके शरीर पर सांप रेंग रहे हों । आत्मा तक कराह उठती थी लेकिन इसी बीच उसके दादाजी बीमार हो गए और शिशिर उसी में व्यस्त हो गया । वन्दना ने सोचा चलो अच्छा हुआ शिशिर उसके पास कम समय ही रह पाएगा चार दिनों के बाद ही तो अमेरिका जाना है और फिर उसके बाद नीरव का साथ । उसकी याद आते ही वह वह रोमांचित हो उठती थी । नीरव के लिए ही तो उसने सारे दुख सहे थे सह भी सकती थी ।

अमेरिका के एक सुन्दर से घर में वे दोनों गए । शिशिर ने हंसते हुए कहा-देखो यह है हमारा घर है ओर इस घर की रानी हो तुम । इस घर को जैसे चाहे रख सकती हो तुम जैसे चाहे सजा सकती हो । मै तो इस घर में एक गेस्ट की तरह रहूगां । थके दोनो थे शिशिर ने कहा तुम आराम करो । मुझे औफिस जाना है उधर से ही मैं तुम्हारे लिए खाना लेता आऊगां । उसकी गाडी,की आवाज सुन उसने चैन की सांस ली । तुरत ही उसने न्यूयार्क नीरव को फोन लगाया और जी भर के बातें की । उसकी थकान तो नीरव की आवाज सुनकर ही खत्म हो गई । वह हंस रही थी खिलखिला रही थी और कह रही थी -बस मैं कल से सदा के लिए तुम्हारी हो जाऊगी । नीरव ने हंसते हुए कहा -कहीं तुम्हारी चोरी पकडी गई तो क्या करोगी? अभी तुम्हारे पति महोदय आ जाएगे और देखेंगे कि मेरी पत्नी किसी दूसरे व्यक्ति से से इस तरह घुलमिलकर बातें कर रही है तो उनका तो हार्टफेल हो जाएगा । वन्दना खिलखिलाकर हंस पडी । यह निश्चय किया गया कि कल शिशिर के औफिस जाते ही वन्दना उसे फोन कर देगी और वह आकर उसे ले जाएगा । दरवाजे पर आहट होते ही वन्दना चुपचाप बिछावन पर लेट गई । शिशिर का लगा जैसे वन्दना गहरी नीदं में सो गई है । उसने बडे, प्यार से उसे उठाया और कहा-कहा खाना खा लो फिर सो जाना ;वन्दना ऊं कहके फिर सो गई । थोडी देर बाद उठी तो देखा शिशिर टी वी, के पास बैठा है । सुबह जब उसकी नीदं खुली उसने देखा शिशिर दफ्तर

जाने को तैयार है, अंगडाई लेते हुए उसने कहा-आंख ही नहीं खुल रही है । खूब नीदं आई । तुम्हारे लिए मैं कुछ नास्ता बना दूं ?मुझे बता दो क्या क्या कहां रखा है ? शिशिर ने मुस्कुराते हुए कहा-कल से रोज नास्ता बनाना है और प्यार से खिलाना है । तुम्हारे आने से घर घर जैसा लग रहा है । शाम को चलकर खाने पीने का कुछ सामान ले आएगें । फ्रिज में रखे शाम के लाए सैंडविच पडे, हैं तुम उन्हें गर्म करके खा लेना मैं बाहर ही कुछ खा लूंगा । शिशिर के बाहर जाते ही जैसे उसे पंख लग गए ।जल्दी से नहा धोकर उसने कपडे, बदले और तैयार होने लगी अभी पैकिंग भी तो करनी है ? आधे घंटे आठ वर्ष की तरह लग रहे थे उसे । नीरव को देखते ही वह उससे लिपट गई और दसरे ही पल वे नीरव की गाडी में थे । अपने स्वप्नों में मग्न वन्दना आखें मीचे सोच रही थी कि नीरव जहां भी ले जाय वह जाने को तैयार है । रह रह कर हंसती खिलखिलाती वन्दना की नजर जब सडक के किनारे गई तो वह चौकीं-यह कहां ले जा रहे हो?नीरव अत्यन्त गंभीर था । इतनी देर बाद उसने मुह खोला-यहीं रहता हूं मैं अपने दोस्तों के साथ ।;वन्दना ने सहमते हुए कहा-यह तो बडी गन्दी जगह है? अमेरिका में भी ऐसी जगह है विश्वास नहीं होता? नीरव ने उसे कठोर दृष्टि से देखा ओर बोला मैं किसी महल में नहीं रहता हूं जब नौकरी करने लगूंगा तो अलग घर ले लूंगा । फिलहाल तो हमें दिन काटना है ।;वन्दना आश्चर्य से जड, थी आजतक अमेरिका के जितने भी फोटो उसने देखे थे उसमें ऐसी तो कोई जगह नहीं थी ? और सफाई इतनी की एक तिनका भी आंखों को चुभे । चमचमाते हुए घर हरियाली और व्यवस्था । एक छोटे से मकान के आगे नीरव ने गाडी रोकी नीरव उसका सामान लेकर जब घर के अन्दर घुसा पीछे पीछे भौचक्की सी वन्दना थी जैसे ही वह घर के अन्दर घुसी चार पांच लडके,हू हू करके हंसने लगे ओर सीटी बजाने लगे । अचानक की इस आवाज से डरकर वन्दना नीरव से सट गई ।

उन लडकों की विचित्र वेष भूषा और बढी दाढी को देख उसे डर लगा । नीरव बिल्कुल शान्त था जैसे कुछ हुआ ही न हो । उसने सहमी हुई वन्दना को देखकर कहा-यह अमेरिका है यहां देहातियों की तरह मत करो जब इनकी महिला मित्रों से मैं मजाक कर सकता हूं तो इन्हें भी अधिकार है कि वे तुम्हारे साथ मजाक करें । उनके छू लेने से तुम अपवित्र नहीं हो जाओगी ? वन्दना का दम घुटता सा लग रहा था । उसे लगा वह दौडकर भाग जाय पर भागकर जाएगी कहां? वह सहमी सी नीरव से सट कर बैठी रही । उनमें से एक गोरा लडका, जो शायद पिए हुआ था उसका हाथ पकड कर अपनी ओर खीचने लगा । डर के मारे वन्दना की चीख निकल गई । उसने सहायता के लिए नीरव की ओर देखा लेकिन वह तो निर्विकार भाव से बैठा रहा जैसे कुछ भी अनहोनी न हो । जब वह दौडकर,उससे लिपट गई तो वह बोला-देखो यह मेरे दोस्त हैं । एक बार जब मैं बडी, मुश्किल में फसं गया था तो इन्हीं लोगों ने मेरी मदद की । मुझे अपने साथ रखा मुझे पैसे दिए खाना दिया ओर हर तरह से मेरी मदद की । सिर्फ छह महीने के बाद मैं तुम्हें अलग मकान में रखूंगा तब तक तो यह सब कहना ही पडेगा,। वन्दना को बडा, आश्चर्य हो रहा था क्या यही नीरव है जिसके प्रेम में वह पागल थी । वह भी तो उसे प्यार करता था फिर यह क्या है? क्या कोई इतना भी बदल सकता है? क्या इसका खून पानी हो गया? यह तो कल्पना से भी परे है । वन्दना के अपमान को कितनी आसानी से सह रहा है ?क्या इसका खून नहीं खौलता?उसे तो विश्वास ही नहीं हो रहा था कि यह वही नीरव है जिसके लिए उसने शिशिर के साथ कितना बडा, धोखा किया । कहां गए नीरव के वे वाद वे कसमें कहां गई जिसके बल पर उसने सबकुछ छोडा ओर इतना बडा, कदम उठा लिया । उसे लगा जैसे यह नीरव नहीं कोई ओर है और उसकी आखों से पाश्चाताप के आ,सू गिरने लगे थे । वन्दना को रोता देख उनमें से एक लडका जो विचित्र वेश भूषा में था उसकी ओर बढा । उसके बाल ओर दाढी काफी बढी हुई थी । बडे बडे मोतियों की माला उसने अपने गले में पहनी हुई थी । कानों में बुन्दे थे और भौहों के बीच भी एक बाली थी । उसके शरीर से दुर्गन्ध आ रही थी शायद शराब की-हे हे ब्यूटी व्हाई काइंग; कहता हुआ उसे आलिंगन में लेने की कोशिश करने लगा लेकिन नीरव के समझाने पर उसने उसे छोड, दिया । वन्दना का हृदय अबतक कांप रहा था । वे सभी तो जानवर जैसे लग रहे थे वन्दना को ? शायद जंगली जानवरों से भी लोग इतना नहीं डरते होंगे ? उसे नीरव को देखकर और भी दुख हो रहा था । जो व्यक्ति वन्दना के सम्मान की रक्षा नहीं कर सकता वह वन्दना का नीरव तो हो ही नहीं सकता ? रात में नीरव ने कहा -अपने को इस जगह के लायक बनाओ नहीं तो बहुत दुख होगा । किसी आदमी से इतना डरने की क्या जरूरत थी?लेकिन कैसे संभव है कि वह अपने को इस वातावरण के लायक बना ले ? उसका हृदय आर्तनाद कर रहा था अगर जरा सा मौका मिले तो वे उसे चीर फाड कर रख देगे । नीरव के बहकावे में उसने शिशिर को धोखा दिया अगर यह सब उसे मालूम होता तो वह हगिर्ज शिशिर कौ नहीं छोडती,। यह तो उसे उन दरिन्दो के हाथ छोड सकता है ? अब क्या हो सकता था ? तीर तो कमान से निकल चुका था । चारों ओर अधकार ही अंधकार था अब तो । एक अनजाने भय के कारण वह रात भर वह सो नहीं सकी और डर के मारे अपने कमरे से निकली भी नहीं । उसे लग रहा था कि कोई अभी उसके कमरे में आ जाएगा और वन्दना कुछ नहीं कर पाएगी । अगर वह उसका बलात्कार करने की

कोशिश करेगा तब भी क्या नीरव उसे देखता रहेगा?कोई मदद को आएगा भी तो कहां से ? चारों ओर तो अजीब सा सन्नाटा है?सड,क पर गाडियां तेजी से दौड रही हैं और उसका मन भी उसी तेजी से दौड रहा है । क्या वह शिशिर के पास लौट जाय?लेकिन उसने भी उसे दुत्कार दिया तो ? उसकी तो वह अधिकारी भी है क्योकि जो कुछ भी उसने किया है वह क्षमा करने योग्य नहीं है । कोई भी व्यक्ति ऐसी स्त्री को स्वीकार नहीं करेगा । एक बार प्रयास करने में क्या हर्ज है?उसे उम्मीद की एक किरण नजर आई लेकिन उसे उसका कहां पता मालुम था । उसे न कोई जगह मालुम है ओर न शिशिर का पता ही वह कैसे जाय? वह तो इस दुनिया में किसी को मुह दिखाने लायक भी नहीं है । अचानक खिडकी से बाहर उसे एक भारतीय स्त्री नजर आई । वह अपने बच्चे को बाहर घुमा रही थी । उसे आशा की एक किरण नजर आई वह दौडकर उसके पास पहुचीं और उसे अपनी पूरी कहानी संक्षेप में सुना दी । वह स्त्री आश्चर्य से उसकी ओर देखती रही फिर उसने कहा-चलो पहले मेरे घर में चलो यहां कोई देख लेगा ।;उसके पति वहां वकील थे और वह कोई काम नहीं करती थी क्योकि उसका बच्चा अभी छोटा था । उस सहृदय महिला का नाम रमणी था उसका हृदय वन्दना की कहानी सुनकर भर आया । उन्होनें वन्दना की मदद करने का आश्वासन दिया ओर काफी पिलाई और बोली - इस घर में अनेक बार लडकियों को आते देखा है उन्हें देखकर यह तो नहीं लगता कि वे सम्भ्रान्त घरों से है पर तुम्हारे साथ तो बहुत बुरा हुआ ? तुमने कैसे उस पर विश्वास कर लिया? खैर जो होना था वह तो हो चुका । कल इसी समय आ जाना मेरी एक परिचिता है वे डे केयर चलाती है शायद वे तुम्हारे रहने का इन्तजाम भी कर दें ? अगर तुम्हारा भारत जाने का विचार है तो स्पष्ट कहो शायद तुम्हारा टिकट तुम्हारे पास हो वन्दना ने जल्दी से कहा नही नहीं मैं मर जाऊगी पर भारत जाना पसन्द नहीं करुगी । किस मुह से जाऊगी मैं? लोग क्या कहेंगे?रमणी ने कहा-आदमी ही आदमी के काम आता है ओर फिर हम भारतीय हैं हमे तो एक दूसरे की मदद करनी ही चाहिए । दुश्चिताओं मे डुबी वन्दना उस दिन सो नहीं पाई । उसके मन में उथल पुथल मची थी । पता नहीं क्या होगा?नीरव क्या करेगा? पता चलने पर वह रमणी से लडेगा तौ नही । दूसरे दिन अपने सारे सामानों के साथ वन्दना ने घर छोड दिया । रमणी उसे पास के ही शिशु निकेतन में ले गई । यह शिशु निकेतन अच्छा चल रहा था ओर उसकी मालकिन एक प्रौढा भारतीय महिला थी । वह उससे बडे प्यार से मिली । उसे रहने के लिए एक कमरा भी दिया । वन्दना दिन भर तो बच्चों के साथ रहती पर रात में उसे बडा, भय लगता । खाना तो वह बच्चोवाला ही खाती थी आखिर जीवन रक्षा तो करनी ही थी । एक दिन शिशु सदन की प्रिसिपल ने उसे बुलाया ओर बोली -कुछ पढाई कर लो तो वेतन अचछा मिलेगा ओर जीवन ठीक से गुजरेगा । छोटी छोटी चीजों का अभाव नहीं झेलना होगा । वन्दना की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे जो उसे अच्छी नौकरी मिल सके । अंत में उसने कम्प्यूटर की एक छोटी सी टैंनिग लेने का निश्चय किया ओर इसमें भी पिसिपल ने उसकी आर्थिक मदद की । प्रिसिपल की बेटी उधर ही नृत्य सीखने जाती थी अत; वह रोज वन्दना को अपने साथ ले जाती ओर साथ ही ले भी आती थी । वह रोज सडक पर आकर उसका इन्तजार करती थी ओर वह नियत समय पर आकर उसे ले जाती थी और शिशु निकेतन तक छोड, जाती । उस दिन भी तो वह उसका इन्तजार ही कर रही थी ? उदास निराश ओर हताश तभी उसके पास हरे रंग एक गाडी आकर रुकी वन्दना ने नजरें उठाई और गाडी में शिशिर को देखकर भौचक्की रह गई । उसने तो सोचा भी नहीं था कि उससे इस तरह मुलाकात होगी ? वह किकर्तव्यविमूढ सी उसकी ओर देखती रही थी कि शिशिर ने कहा कहां-जाना है चलो मैं छोडं दुगा । वन्दना को लगा वह फूट फूटकर रो देगी । फिर अपने को बडी मुश्किल से संभाला और कठिनाई से नोली -बस का इन्तजार कर रही हूं । शिशिर ने गाडी का दरवाजा खोला तो यंत्रचालित सी वह उसमें बैठ गई । लज्जा ओर पाश्चाताप से उसका हृदय चित्कार कर रहा था । उसकी आखें भर आई । शिशिर के चेहरे पर एक रंग आता दूसरा जाता था । मुख्य भाव तो उदासी का ही था । थोडी देर बाद उसने कहा-अगर कोई तुम्हारा प्रेमी था तो मुझसे विवाह करने की क्या मजबूरी थी? वन्दना ने लगभग रोते हुए कहा-इन सवालो का कोई मतलब रह गया है?मेरी किस्मत में जो था मुझे मिला अब तो सारे संबंध टूट ही गए है । तुम्हारे साथ जो मैने किया उसी का फल तो भोग रही हूं ? मेरे जख्मों को और मत कुरेदो ?शिशिर ने कुछ कठोर स्वर में कहा -अपनी तो चिन्ता है मेरे जख्मों के बारे में भी कभी सोचा है? इतना प्यार विश्वास और अरमानों के साथ तुम्हे लाया था । तुमने मेरा हृदय चूर चूर कर दिया । वन्दना अब अपने को रोक नहीं सकी फूट फूट कर रो पडी । शिशिर की आखों से भी लगातार आसूं गिर रहे थे । वह वन्दना को अपने घर ले गया ओर बोला-चाय पीकर चली जाना । वन्दना फूट फूटकर रोए जा रही थी । शिशिर उसके लिए पानी ले आया । पानी पीकर थोडा आस्वस्त होने पर हिचकियों के बीच उसने अपनी कहानी बता दी । वह गिडगिडाकर कह रही थी शिशिर को -मुझे माफ कर दो जो गलती मैने की उसकी सजा मुझे मिल गई है । तुम किसी और लडकी से विवाह कर लो और मुझे अपनी बर्बादि दुनिया के साथ छोड दो । शिशिर चुपचाप सोफे पर बैठा आंसू बहाता रहा । बाहर रात गहरा रही थी । बादल घिरे थे और अचानक जोरों से बिजली चमकी । शिशिर उठकर वन्दना की बगल में आ बैठा और बोला-हमारे यहां कहते हैं कि इश्वर ही

शादी तय करता है मनुष्य तो उसके आदेश का सिर्फ पालन करता है । मैने अग्नि के सामने तुम्हारे साथ फेरे लिए है साथ जीने मरने की कसमें खाई हैं ऐसे कैसे तुम्हें छोड सकता हूं? अब जो हुआ उसे भूल जाओ । सोचों कि एक हादसा था जो गुजर गया । सब भूलकर घर लौट आओ । यह घर तो तुम्हारा ही है न? अब भूलकर भी पिछली घटनाओं की चर्चा न किसी से करेगें और न खुद ही याद करेगें । वन्दना उसके पैरों पर गिर पडी, और रोते हुए बोली-मेरा अपराध तो क्षमा करने योग्य नहीं था फिर भी तुमने मुझे क्षमा कर दिया । शिशिर ने कहा -मैं भी इतने दिन बहुत दुखी रहा । ईश्वर न करे फिर ऐसे हादसों से दो चार होना पडे, । जहां जागे वहीं सवेरा है न?शिशिर ने वन्दना को गुदगुदा दिया । वन्दना के होठों पर भी मुस्कुराहट आ गई पता नहीं कितने दिनों के बाद वह मुस्कुरा रही थी । वन्दना ने भूल तो बहुत बडी की थी पर शिशिर ने उसे ऐसे क्षमा कर दिया जैसे कुछ हुआ ही न हो । कुछ लोग इतने उदार भी होते हैं? सोच रही थी वन्दना । कहां शिशिर अेअेर कहां नीरव लेकिन क्या नीरव ऐसा ही था और उसकी भावनाओं से खिलवाड कर रहा था ?उसने अपने विचारों को झटक कर फेंक दिया और और प्रिसिपल मिसेज सूरी को फोन करने चल पडी ।